

रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

जीयो और जीने दो मन्तर
जँ जपतै ई जग संसार।।
जग अमनकेँ जड़ि जुएतै
हरिएतै मानव अधिकार।।

जीयो और जीने दो मन्तर
राखू हरदम याद यौ।-2
किए केकरोसँ झगड़ा हेतै
हेतै किए विवाद यौ।-2
किए...।

आसमान छी सबहक पिता
भू मण्डल छी सबहक माता।-2
तँए भैयारी सभ जग वासी
मनमे करू सुआद यौ।-2
किए...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

मान नै केकर मन मानै छै
केकर मन मानै अपमान।।
अपनाबू सभ जीव जगतकेँ
पूरत अहूँकेँ ई अरमान।।

जेकरा नै जीवनक आधार
की बुझतै मानव अधिकार।-2
ऊँच नीचक हथियार उठा कऽ
जगसँ लड़ै लड़ाइ छै।।-2
बड़ी...।

मानवताक शासन मानू
सभ मानवकेँ बड़बैर जानु।-2
जीबैक हक छै सभकेँ बड़बैर
अन्धोकेँ ई देखाइ छै।-2
बड़ी...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'
गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन,
करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

जागू बाबू देश बँचाबू
लबका खुनक बोलीसँ।।
जे मानवमे फुट कराबै
तेकरा मारू गोलीसँ।।

सेवाकेँ जन-जन बुनबै
मानवताक मन्तर गुनबै।-2
जग अमन केर माला लऽ कऽ
घर-घर धूम मचेबै यौ।-2

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)



सौजन्य, पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)



रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'

गाम : रसुआर (सुपौल), अनवरत साहित्य लेखन, करीब आधा दर्जन पोथीक प्रकाशन

झारू बिनु नहि घरक शोभा
झारू बिनु नहि होएत हवण।।
हमरा बिनु नहि मन्दिर-मश्जिद
आर ने देशक संसद भवन।।

झारूसँ जुनि घृणा करू
ई तँ अनुचित बात छी। -2
जइसँ मिलै छै जगमे शान्ति
तेकर हम शुरूआत छी।। -2

जइ घर नहि छै हम्मर आदर
तइ घर घुसतै दुक्खक बादर। -2
पएर पसारत रोग बेमारी
ओघर भूतक जमात छी। -2
जइसँ मिलै...।

राजा रंक दानव आ देवा। -2
के गीन सकतै रूप-रंग हम्मर
सोचैवाली बात छी। - 2
जइसँ मिलै...।

'गीतांजलि झारू' (गीत/झारू संग्रह- 2018)

